मन के दस कमरे

शिक्षा — निर्माण

एक ऐसा घर है जिसमें हम सब रहते हैं, बिना कभी उसे चुने।

उसका कोई पता नहीं। वह किसी नक़्शे पर नहीं मिलता। फिर भी हम उसे किसी भी सच्चे घर से बेहतर जानते हैं।

भीतर दस दरवाज़े हैं।

कुछ हम हर दिन खोलते हैं, बिना जाने।

कुछ हम बंद रखते हैं, यह दिखावा करते हुए कि उनसे हमारा कोई नाता नहीं।

और फिर कुछ कमरे ऐसे हैं जिन्हें हमने ख़ुद नहीं बनाया, फिर भी वे किसी तरह हमारे भीतर बसे रहते हैं।

यह कोई सिद्धांत नहीं है।

यह मनोविज्ञान की कोई किताब नहीं जो शेल्फ़ पर धूल खा रही हो।

यह उस आदमी का विवरण है जो इन दस कमरों में एक-एक करके चला, अक्सर यह जाने बिना कि वह कहाँ है, और जो अब, कुछ और वर्षों के बोझ के साथ, उन्हें ठीक वैसे ही बयान करने की कोशिश कर रहा है जैसे उसने उन्हें जिया।

दस दरवाज़े। मैंने सब खोले।

कुछ जिज्ञासा से। कुछ अनिच्छा से। कुछ तब जब लौटना पहले ही बहुत देर हो चुका था।

अगर ये कमरे परिचित लगें, तो यह इसलिए नहीं कि वे मेरी कहानी कहते हैं।

यह इसलिए है क्योंकि, कहीं गहरे में, वे तुम्हारी भी कहानी कहते हैं।

फर्डिनांडो

शिक्षा — निर्माण

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

घर पर सबसे पहले मेरी माँ ने शुरुआत की। फिर मेरे पिता ने बारी सँभाली। फिर आईं मेरी दादी और मेरी मौसी। जबकि मैं उनका बेटा तक नहीं था। हर किसी ने पढ़ाया। हर किसी ने सुधारा। हर किसी ने कुछ न कुछ पीछे छोड़ा। स्कूल में उन्होंने मुझे सिखाया कि क्या सोचना है।

ज़िंदगी ने मुझे सिखाया कि कैसे सोचना है। दोनों में ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ है। शिक्षा एक दरवाज़ा हो सकती है। पर वह एक पिंजरा भी बन सकती है। यह इस पर निर्भर है कि चाबी किसके हाथ में है। मैं ऐसे शिक्षकों से मिला जिन्होंने दिमाग़ भर दिए। और ऐसे मार्गदर्शकों से भी जिन्होंने आँखें खोल दीं। इन्हीं आख़िरी लोगों ने मेरी ज़िंदगी बदल दी। क्योंकि शिक्षा का मतलब आज्ञाकारिता गढ़ना नहीं है। इसका मतलब आज़ादी गढ़ना है। सच्ची शिक्षा महज़ जानकारी नहीं जोड़ती। वह इंसान को उसके अपने-आप तक लौटा लाती है। पर सबसे गहरे सबक़ बाद में आते हैं। वे तब आते हैं जब ग़लतियाँ अपना बिल थमाती हैं। जब हक़ीक़त उसे सुधारती है जिसे घमंड बचाता रहा। जब आपको पता चलता है कि जिन्हें आपने अनसुना किया, वही सही थे। असली गहरी शिक्षा वहीं से शुरू होती है। वहीं से आप बौद्धिक अपराध करना बंद करते हैं। इसलिए नहीं कि कोई देख रहा है। बल्कि इसलिए कि आख़िरकार आप समझ जाते हैं। और एक बालिग़ के लिए, समझ जाना ही इकलौती ऐसी नाकामी है जिसे क़ुबूल करने लायक़ माना जा सकता है।

फर्दिनांदो

 © 2026 Gillettenarrative.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।